श्रम

ब्रिटिश ट्रेड यूनियन से मिला न्यौता तो यूरोपियन आन्दोलन को भी देखा

सतीश कुमार

1978 में नौकरी से बर्खास्त होकर पूरी तरह से ट्रेड यूनियन आन्दोलन में व्यस्त हो जाने के साथ-साथ गुडईयर कम्पनी से अपने केस को भी लड़ा। इस दौरान देश की न्याय व्यवस्था को खूब देखा व इसे समझने और निपटने के तरीके भी आजमाये। इस दौरान, जब तक अदालती आदेशानुसार मुझे गुडईयर से मेरा बकाया पैसा नहीं मिला था तो मेरी वित्तीय स्थिति अच्छी नहीं थी। लेकिन मजबूत इरादों के साथ मैने अपने आपको कम से कमतर साधनों पर जीने के लिये तैयार कर लिया था। अविवाहित होने के चलते कोई परिवारिक जिम्मेवारियां तो थी नहीं, केवल जीवित रहने के लिये रोटी-कपड़े का ही मसला था जिसे मेरे मज़दूर साथियों ने बखूबी हल किया था, यानी यह मसला कभी मसला रहा ही नहीं।

इसी संघर्ष-भरे सख्त जीवन के दौरान मेरे कार्य-कलापों को कुछ ब्रिटिश ट्रेड यूनियनिस्टों ने भी देखा था जो मैं नहीं जानता था। यकायक 1984 के अप्रैल में मुझे ब्रिटिश लेबर पार्टी के सांसद टैरीफ़ील्ड का एक पत्र मिला जो उन्होंने फ़ायर ब्रिगेड कर्मचारी यूनियन के अध्यक्ष के नाते लिखा था। इस पत्र के द्वारा मुझे वहां होने वाली एक कॉन्फ्रेंस के लिये न्योता गया था। आने-जाने की टिकटें कूरियर द्वारा भिजवा दी गयी थीं। यह मेरे लिये दोहरी खुशी का मौका था; एक तो मैं अपने केस को लगभग जीत चुका था, तंगहाली से निजात पा चुका था, जाहिर है ऐसे में हौंसले बुलंद होना स्वाभाविक था।

मई के पहले सप्ताह में जाना तय हुआ। इस वक्त तक मुझे विदेश यात्रा का कोई अनुभव नहीं था। वीज़ा शब्द सुन रखा था तो इस बाबत पूछ-ताछ करने पर पता चला कि ब्रिटेन जाने के लिये वीज़ा की जरूरत नहीं है, यह वहां के हीथ्रो हवाई अड्डे पर उतरते ही मिल जाता है। इतनी सरल सी बात पर यकीन नहीं हुआ तो पालम, (आज के इन्दिरा गांधी हवाईअड्डे) पर जाकर इस बात की तसदीक की। उन दिनों दिल्ली पुलिस के सब-इन्स्पेक्टर इमिग्रेशन चेक करते थे, जिनमें से कुछ मेरे परिचित भी थे। वे मेरे इस नादानी पर हंसे, पासपोर्ट और टिकट देख कर बोले, फ्लाइट के टइम पर आ जाना बिल्कुल चढ़ा देंगे जहाज में।

तारीख तो ठीक से याद है नहीं, परन्तु मई माह का आरम्भ था। मैं रात के समय हवाई अड्डे पहुंच गया। पासपोर्ट आदि की जांच के बाद इमिग्रेशन ड्यूटी पर लगे पुलिस वालों ने मुझे बोर्डिंग लाऊंज की ओर भेज दिया, जहां से मैं निश्चित समय पर जहाज में घुसा। यह चार इंजनों वाला ब्रिटिश एयर का विशालकाय जहाज था। ठीक से तो याद नहीं परन्तु 400 के करीब यात्री इसमें रहे होंगे। इससे पहले पुष्पक जैसे छोटे-मोटे हवाई जहाज तक में तो न केवल उड़ने का बल्कि उसे उड़ाने का भी अनुभव था, लेकिन पहली बार इतने बड़े विशालकाय जहाज को देख कर विस्मित होना स्वाभाविक था। करीब तीन-चार घंटे की उड़ान के बाद जहाज उतरा दुबई हवाई अड्डे पर। सुबह हो चुकी थी। वहां करीब एक डेढ घंटे का ब्रेक था। मैं हवाई अड्डे की चहल-पहल व रौनक देखता रहा। यह हवाई अड्डा उन दिनों नया-नया बना था। इसकी भव्यता देखते ही बनती थी। इसके सामने हमारा पालम हवाई अड्डा कहीं नहीं ठहरता था।

यहां से उड़ने के बाद जहाज कुवैत के अड्डे पर उतरते वक्त मेंने देखा कि दुबई की ही तरह यहां चारों ओर रेत ही रेत नज़र आ रही थी। हरियाली के नाम पर कहीं-कहीं खजूर के पेड़ नज़र आ जाते थे। मई माह की चिलचिलाती धूप की तपिश को बेशक जहाज के भीतर महसूस नहीं किया जा सकता था, लेकिन वीरान पड़े निर्जीव रेगिस्तान को देख कर समझा जा सकता था कि वहां जीवन कितना कठिन होगा। कुवैत एयरपोर्ट भी उन दिनों नया-नया बन कर तैयार हुआ था। उसकी भव्यता भी दुबई से कमतर न थी; जाहिर है यह सब तेल की कमाई के साथ-साथ विदेशी साम्राज्यवादियों से कुछ हद तक मुक्ति पाने का भी परिणाम था।

बाद दोपहर, जहाज़ लंदन के हीथ्रो एयर पोर्ट पर उतरा। उत्सुकतावश मैं उतरते जहाज से ही पूरे लंदन को देख लेने का प्रयास करता रहा। उतरने के बाद नियमानुसार अन्य यात्रियों की तरह मैं भी कतार में लग कर इमिग्रेशन अधिकारी के काऊंटर पर पहुंचा। उसने तमाम यूरोपियन पासपोर्ट धारकों को तुर्त-फुर्त रुखसत कर दिया और मुझे एक तरफ़ खड़ा कर दिया। पहली और लम्बी हवाई यात्रा से मैं कुछ थका-थका सा महसूस कर रहा था और जुकाम जैसा भी अनुभव हो रहा था। नाक व कान भी जैसे कुछ बंद से हो गये हों, उस पर मुझे इस तरह रोके जाना काफ़ी अखरने लगा। सबको निपटाने के बाद उस अधिकारी ने मुझ से उल्टे-पुल्टे सवाल पूछने शुरू किये, जिनके मैने सटीक व जोरदार जवाब दिये। अन्त में उसने पूछा कि जेब में पैसा कितना है? मैंने कहा कुछ भी नहीं, तो फ़िर कहां जाओगे कैसे ठहरोगे अदि-आदि। यह सब वह बड़े ही तल्ख लहजे में पूछ रहा था । मैने भी पलट कर उसी लहजे में जवाब दिया कि जिसने मुझे यहां न्योता है वही सम्भालेगा और उनके आदमी बाहर खड़े मेरा इन्तज़ार कर रहे हैं।

मैंने यहां तक भी कह दिया कि ज्यादा दिमाग मत चाट मेरा, यदि तुझे तकलीफ़ है तो मुझे वापसी फ्लाईट में बैठा दे।

मेरे तेवर देख कर वह सीधे रास्ते पर आ गया। उसने बाहर गेट पर आवाज़ लगवा कर मुझे लेने आये व्यक्ति को बुलाया। वह था स्थानीय ट्रांस्पोर्ट कॉरपोरेशन यूनियन का सचिव फिलिप। वह भी बाहर प्रतिक्षा करते-करते परेशान हो चुका था, लिहाजा आते ही मुझसे सारी बात सुन कर उस अधिकारी को जो बुरी तरह से हड़काया कि वह सॉरी-सॉरी ही करता रह गया। फ़िलिप ने उस पर नस्लीय भेदभाव का आरोप लगाते हुए उसे धमकी दी कि वह इस मामले को उच्च स्तर पर उठा कर उसके विरुद्ध कड़ी कार्यवाही सुनिश्चित करेगा। यह सुनकर तो वह अधिकारी बिल्कुल ही लमलेट हो गया। उसने तुरन्त मुझे एक माह का वीज़ा दे दिया।

खैर इसके बाद मैं तो फिलिप के साथ बाहर निकल आया, लेकिन मुझे यह एहसास जरूर हो गया कि एक भारतीय और वह भी खाली जेब, की इन देशों में कितनी बेकद्री होती है। हमें वहां दोयम दर्जे का इन्सान समझा जाता है। उन्हें लगता है कि यहां हर कोई नौकरी ढूंढने अथवा बसने के लिये आता है। हां, यदि मेरी जेब में ब्रिटिश पाऊंड भरे होते और मैं अपनी रईसी के कोई पुख्ता सबूत पेश कर पाता तो यह अधिकारी भी मुझे साहब सम्बोधित करके मेरा स्वागत करता। जाहिर है यहां पैसे की ही कद्र है। पैसा ही भगवान है।

(सम्पादक : मजदूर मोर्चा)

कोविशील्ड के टीके के बाद भारत में अब तक दर्जनों मौतें

सुशील मानव

कोविशील्ड वैक्सीन के टीकाकरण के बाद कुछ लोगों में खून का थक्का जमने की ख़बरों के बाद डेनमार्क, नार्वे और आइसलैंड के स्वास्थ्य प्राधिकरणों ने एस्ट्राजेनेका की कोरोना वैक्सीन के इस्तेमाल को निलंबित कर दिया है। इससे पहले ऑस्ट्रिया ने एस्ट्राजेनेका के एक बैच के इस्तेमाल पर रोक लगा दी थी। बता दें कि डेनमार्क में कोविशील्ड टीका लगने के बाद 60 वर्षीय महिला के खून में थक्का जमने से उसकी मौत हो गई। उसे उसी बैच का टीका लगा था, जिसका प्रयोग ऑस्ट्रिया में हो रहा था।

मामला सामने आने के बाद डेनमार्क ने दो हफ्ते के लिए टीके का इस्तेमाल को रोक दिया है। नार्वे और आइसलैंड ने भी इसी तरह का कदम उठाया है। वहीं इटली में भी एस्ट्राजेनेका की वैक्सीन का एक बैच निलंबित किये जाने की सूचना है। इस बीच, यूरोपीय यूनियन के दवा नियामक यूरोपीय मेडिसिन एजेंसी (ईएमए) का कहना है कि वैक्सीन के फायदे इससे होने वाले ख़तरों की तुलना में बहुत ज्यादा हैं और इसका प्रयोग जारी रखा जा सकता है।

वहीं यूरोपीय यूनियन दवा नियामक का कहना है कि वैक्सीन लगने के बाद खून का थक्का जमने वालों का अनुपात लगभग वही है, जितना कि आम आबादी में होता है। टीका लगवाने वाले 30 लाख लोगों में से 22 में थक्का जमने की बात सामने आई है। ईएमए ने कहा कि डेनमार्क और नार्वे ने सतर्कता के तौर पर टीके को निलंबित करने का फैसला लिया है।

जाहिर है खून का थक्का जमने और हर्ट अटैक का आपस में प्रत्यक्ष संबंध है। गौरतलब है कि भारत में कोविशील्ड टीके लगाये जाने के बाद हुई तमाम मौतों का कारण पोस्ट मार्टम रिपोर्ट में हर्ट अटैक ही बताया गया है। वहीं कोविशील्ड टीके से हुई तमाम मौतों के मामले में एक समानता और इत्तफाक यह है कि सभी को टीके लगाए गए थे। और टीका लगाए जाने के बाद उनके सीने में दर्द उठा और बाद में सभी हृदयाघात के शिकार हो गए।

गोरखपुर निवासी व ऋषिकेश एम्स में मेडिकल ट्रेनी 24 वर्षीय डॉ. नीरज सिंह की 14 फरवरी को मौत हो गई थी। उन्हें तीन फरवरी को कोविशील्ड का टीका लगाया गया था।

इससे पहले 22 जनवरी को गुड़गांव की राजवंती (58 वर्ष) नामक स्वास्थ्यकर्मी की मौत हो गई थी। राजवंती को 16 जनवरी को कोविशील्ड वैक्सीन दी गई थी। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भांगरौला में कार्यरत थी।

लाल सिंह का आरोप है कि उनकी संगिनी राजवंती को 16 जनवरी को पीएचसी भांगरौला में कोविड 19 की वैक्सीन दी गई थी, जिस कारण से उसकी मौत हुई है। दूसरी ओर मृतका के भतीजे दीपक ने बताया कि उनकी बुआ राजवंती को ब्लड प्रेशर, कार्डिक, शुगर आदि जैसी कोई दिक्कत नहीं थी। 2-3 साल पहले घुटनों में दर्द होता था, इसके लिए डॉक्टर की सलाह पर विटामिन की गोली लेती रहती थीं। रेगुलर चेकअप होता रहता था।

कर्नाटक के शिवमोगा जिले में जेपी हॉस्पिटल के मालिक व 59 वर्षीय ऑर्थोपेडिक सर्जन की 20 जनवरी, 2021 को मौत हो गई थी। ठीक दो दिन पहले उन्हें कोविशील्ड टीका लगाया गया था। मृत्यु की वजह को लेकर स्वास्थ्य विभाग की ओर से कहा गया है कि संबंधित चिकित्सक की मृत्यु माईकार्डियल इनफ्रैक्शन (एमआई) की वजह से हुई है। चिकित्सकीय टर्म एमआई को आम प्रचलित रूप में हार्ट अटैक कहा जाता है।

इससे पहले आंध्र प्रदेश के निर्मल जिले में, कर्नाटक के ही बेल्लारी जिले और उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले में ऐसी मौतें हुई हैं। तेलंगाना के निर्मल जिले में 20 जनवरी, 2021 को 42 वर्षीय व्यक्ति की मौत हुई थी जबकि 19 जनवरी की सुबह उसे कोविशील्ड का वैक्सीन दिया गया था। वो प्राइमरी हेल्थ सेंटर में एंबुलेंस ड्राइवर था।

निर्मल जिले के स्वास्थ्य अधिकारी चेरुपल्ली धनराज के मुताबिक एंबुलेंस ड्राइवर को 19 जनवरी, 2020 को 11.30 बजे सुबह टीका लगाया गया था। उसे किसी तरह की तकलीफ नहीं हुई थी और न ही उसने अपनी ड्यूटी छोड़ी थी। वह शाम को 5 बजे घर गया लेकिन आधी रात के बाद 2.30 बजे उसे सीने में दर्द महसूस हुआ और वह जिला अस्पताल पहुंचाया गया। हालांकि, अस्पताल पहुंचने पर उसे मृत घोषित घर दिया गया। उसे स्पष्ट तौर पर हृदयाघात, जिसे मेडिकल भाषा में मायोकैरडियल इंफ्रैक्शन (एमआई) के लक्षण थे और उसकी मृत्यु के टीके से कोई संबंध नहीं है। बातचीत के दौरान तक पोस्ट मार्टम रिपोर्ट नहीं आई थी, हालांकि चिकित्सकों का जोर था कि यह मौत एमआई के कारण हुई है। वहीं, तेलंगाना जैसा मामला उत्तर प्रदेश और कर्नाटक के बेल्लारी में भी हुआ।

कर्नाटक के स्वास्थ्य विभाग ने बताया कि राज्य स्वास्थ्य विभाग के 43 वर्षीय कर्मचारी को भी टीकाकरण के बाद सीने में दर्द हुआ और बाद में वह हृदयाघात का शिकार हो गया।

कर्नाटक के स्वास्थ्य विभाग ने 19 जनवरी, 2020 को जारी अपने बयान में कहा कि 16 जनवरी, 2020 को कर्मचारी को दोपहर एक बजे टीका लगाया गया था। 20 जनवरी, 2020 को सुबह 09.30 सुबह बजे हृदयाघात का शिकार हो गया। उसे हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था जहां सुबह 11.15 बजे उसकी मृत्यु हो गई। वहीं, विभाग ने कहा कि उच्च स्तरीय उपचार उसे मुहैया कराया गया लेकिन इसके बावजूद उसकी जिंदगी बचाई नहीं जा सकी।

कर्नाटक के बेल्लारी जिला स्तरीय एईएफआई टीम ने बिना पोस्ट मॉर्टम रिपोर्ट के अपनी रिपोर्ट में कहा कि मृत्यु का कारण मायोक्रैडियल इंफ्रैक्शन था। संबंधित व्यक्ति को भी कोविशील्ड वैक्सीन लगाई गई थी।

वहीं यूपी के मुरादाबाद जिले में 52 वर्षीय वृद्ध और जिला अस्पताल में वार्ड ब्वॉय की मौत को पोस्ट मॉर्टम रिपोर्ट के हवाले से हार्ट अटैक और कार्डियोपल्मनरी डिजीज की वजह बताई गई है। संबंधित व्यक्ति की मृत्यु 17 जनवरी को हुई थी और एक दिन पहले उसे कोविशील्ड वैक्सीन लगाई गई थी।

वहीं 26 जनवरी को ओडिशा के नौपाड़ा जिला मुख्यालय अस्पताल में नानिकाराम कींट की मौत कोविशील्ड वैक्सीन लगाने के तीन दिन बाद हो गई थी। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा था कि उनकी मौत का टीकाकरण से कोई संबंध नहीं है। ओडिशा स्वास्थ्य विभाग ने कहा कि टीकाकरण का मौत से कोई संबंध नहीं है।

ओड़िशा स्वास्थ्य विभाग के बयान के मुताबिक नौपाड़ा जिले के एक 27 वर्षीय पुरुष की बुरला के वीआईएमएसएआर में गंभीर एनीमिया और इंट्रासेरेब्रल रक्तस्राव (जानलेवा आघात का एक प्रकार जो मस्तिष्क के ऊतकों के भीतर रक्तस्त्राव से होता है) के कारण रक्तस्राव विकार से मृत्यु हो गई।

26 फरवरी के सरकार के बयान के मुताबिक कोविड-19 टीकाकरण के बाद 46 लोगों की मौत हुई है। जबकि 51 लोग अस्पताल में भर्ती किये गये थे। ये स्वास्थ्य सेवा और अन्य फ्रंटलाइन कार्यकर्ता थे। इसके बाद, सरकार ने कोविड-19 टीकाकरण के बाद लोगों की गंभीर,श्वस्त्रद्ध (मौतों या अस्पताल में भर्ती) की रिपोर्ट नहीं दिया है।

पाकिस्तान को भारत की मुफ़्त वैक्सीन का सच

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

नई दिल्ली: पाकिस्तान को कोरोना की मुफ्त वैक्सीन बिल गेट्स की GAVI कम्पनी से दिलवाई जा रही है। भारत से पाकिस्तान को भेजी जा रही कोविड वैक्सीन का यही सच है।

यह भ्रामक प्रचार किया जा रहा है कि मोदी सरकार भारत में उत्पादित वैक्सीन पाकिस्तान को फ्री मतलब मुफ्त में भिजवा रही है ।

सच्चाई यह है इस वैक्सीन को बहुत बड़ी मात्रा में बिल गेट्स द्वारा फंडेड GAVI (Global Alliance for Vaccines and Immunisation) ने खरीदा है और इसे न केवल पाकिस्तान बल्कि दुनिया के तमाम ग़रीब मुल्कों को कोविड के खिलाफ जंग के लिए मुहैया कराया जा रहा है ।

मगर मोदी सरकार आदत से मजबूर है क्योकि मक्कारी, झूठ, फ़रेब, कपट इनकी नीतियों में शामिल जो है। इसी भ्रामक प्रचार को इनके भक्त सोशल मीडिया पर भी आगे बढ़ाते हैं।

असल बात यह है कि भारत में कोविड-19 की एक भी वैक्सीन की ईजाद नही हुई है। यहाँ केवल बनाई जा रही है उसमें समझौता है कि भारत को दवाई बाँटनी ही होगी। लेकिन भारत का गोदी-मोदी मीडिया ऐसे दिखा रहा है जैसे वैक्सीन का फॉर्मूला यंही खोजा गया है और भारत सरकार इसे दूसरे देशों को बाँटकर उपकार कर रही है। गब्बर लूट का माल कभी नहीं बाँटता था। तो ये क्या बाँटेंगे?